Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.02, September, 2023**

An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

Knowledgeable Research

ISSN 2583-6633

Vol.02, No.02, September,2023

http://www.knowledgeableresearch.com/

स्वातन्त्र्योत्तर संस्कृत ग़ज़ल की विकासयात्रा

डॉ.अरुण कुमार निषाद

असिस्टेण्ट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग)

मदर टेरेसा महिला महाविद्यालय, कटकाखानपुर, द्वारिकागंज, सुल्तानपुर

ईमेल-arun.ugc@gmail.com

****

शोधसार

वैदिककाल से प्रारम्भ हुई संस्कृत रचना प्रक्रिया अद्यतन गतिशील है | सहस्राब्दियों से अविच्छिन्नरूपेण प्रवाहित साहित्यधारा का ही विकसित रूप है जो आज इक्कीसवीं शताब्दी तक गतिमान है | प्रो. 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र के शब्दों में-

गङ्गेव भुवं परिपावयते |
गौरवमहिमा संस्कृत भाषा ||

इस भाषा में अनुपम रचना का अक्षय भण्डार है | न केवल यह विश्व-साहित्य में प्राचीनता के लिए अपना प्रमुख स्थान रखता है, वरन् लोकमङ्गल की साधना, व्यावहारिकी शिक्षा तथा मनोरञ्जन का अप्रतिम साधन होने के कारण इसने विश्रुत ख्याति प्राप्त की तथा सार्वदेशिक देशिकों द्वारा मुक्तकण्ठ से प्रशंसा भी अर्जित की है | सभी देशों के विद्वानों ने एक स्वर से यह स्वीकार किया है कि- संस्कृत विश्व की सबसे प्राचीन भाषा है | विश्व का सबसे प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद इसी भाषा में है | साहित्य की प्रत्येक विधा और शास्त्र संस्कृत में सुगमता से प्राप्त हो जाते हैं | विश्व साहित्य की जितनी भी विधाओं में लेखन हो रहा है वह सब कुछ संस्कृत में भी है | इन्हीं सब बातों को देख-सुनकर मैकडोनल, विन्टरनित्ज, पाल डायसन, विन्डिश, हर्टल,मैक्समूलर,थिओडोरआउफ्रेख्त,एच.एच.विल्सन,जी.ग्रासमान,ए.लुडविग, आर.टी.एच. ग्रिफिथ, प्रो.ओल्डनवर्ग, लांग्ल्वा, रुडाल्फ राठ, गेल्डनर, केगी, हिलेब्राण्ट, प्रो. हाउग, डॉ.कीथ, वेबर, आर.वी. क्लेटन, जी.गोण्ड, लुई रेनू, पिशेल, कर्नल जैकब, जी. ग्रास्टा ब्लूमफील्ड, कैलेन्ड, जे. वाकरनागेल इत्यादि विद्वान भी इसकी तरफ आकर्षित हुए |

जर्मन विद्वान मैक्समूलर ने कहा है-"Sanskrit is the greatest language in the world, the most wonderful and most powerful."

इसकी महत्ता का वर्णन करते हुए सर विलियम जोन्स ने कहा है-"संस्कृत एक अद्भुत भाषा है | यह ग्रीक से अधिक पूर्ण है, लैटिन से अधिक समृद्ध है और अन्य किसी भाषा से अधिक परिष्कृत है |"

बीज शब्द : ग़ज़ल, संस्कृत ग़ज़लकार और आधुनिक भावबोध |

****

राजशेखर साहित्य विद्या को पञ्चमी विद्या मानते हैं | यह पुराण, न्याय, मीमांसा और धर्मशास्त्र का सारतत्त्व है | इस संस्कृत साहित्य को दो भागों में विभाजित किया गया है-

1.वैदिक साहित्य तथा 2.लौकिक साहित्य |

Knowledgeable Research ***ISSN 2583-6633*** **Vol.02, No.02, September, 2023**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

वैदिक साहित्य के अन्तर्गत वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् आदि आते हैं | लौकिक साहित्य के अन्तर्गत रामायण, महाभारत, पुराण से लेकर समकालीन समय तक का साहित्य आता है |विद्वानों ने संस्कृत साहित्य का विभाजन इस प्रकार किया है –

1.वैदिक काल | 2.वेदोत्तरकाल या आर्षकाल | 3.महाभारत या पुराणकाल |4.कालिदास के पूर्व का काल | 5.कालिदास का काव्यकाल या संस्कृत साहित्य का स्वर्णयुग | 6.कालिदासोत्तर काल | 7.आधुनिककाल |

आधुनिक संस्कृत साहित्य साहित्य का समय कब से प्रारम्भ होता है, इस विषय पर अलग-अलग विद्वानों के पृथक्-पृथक् विचार हैं | सर्वप्रथम प्रो.वर्णेकर ने अपने मराठी ग्रन्थ 'अर्वाचीन संस्कृत साहित्य' में आधुनिककाल का समय 17वीं शताब्दी बताया है |आचार्य बलदेव उपाध्याय के अनुसार आधुनिककाल का समय सन् 1850 ई. से सन् 1950 ई. तक माना जाता है |डॉ. हीरालाल शुक्ल ने 'आधुनिक संस्कृत साहित्य' में आधुनिककाल का समय सन् 1835 ई. से सन् 1920 ई. तक माना है |

डॉ जगन्नाथ पाठक 'आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास' सप्तम खण्ड में आधुनिककाल का समय इस प्रकार बताते हैं- 1.राशि वडेकर युग (सन् 1890 ई. से सन् 1930 ई. तक) | 2.भट्ट युग (सन् 1930 ई. से सन् 1960 ई. तक) | 3.राघवन् युग (सन् 1960 ई. से सन् 1980 ई. तक) | चन्द्र किशोर गोस्वामी ने आधुनिक संस्कृत काव्य को दो भागों में विभाजित किया है-स्वतन्त्रता पूर्व साहित्य और स्वान्त्र्योत्तर साहित्य |

पद्मश्री प्रो. 'अभिराज' राजेन्द्र मिश्र ने 'देववाणी सुवास: (प्रथम खण्ड) में आधुनिककाल का समय इस प्रकार बताया है- 1.पुनर्जागरणकाल (सन् 1784 ई. से सन् 1884 ई. तक) |2.स्थापनाकाल (सन् 1884 ई. से सन् 1950 ई. तक) |3.समृद्धिकाल (सन् 1950 ई. से अब तक) |

बीसवीं शताब्दी का उत्तरार्ध संस्कृत साहित्य का समृद्धिकाल है | इस युग को समृद्ध बनाने में अनेक रचनाकारों का प्रशंसार्ह योगदान रहा है, जिन्होंने जीवन के बदलते सन्दर्भों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप साहित्य का सृजन कर इस परम्परा की श्रीवृद्धि की है | बीसवीं शताब्दी के लगभग संस्कृत के नवलेखन, नये साहित्य में अनेक नई विधाएँ आई जैसे- रेडियो रुपक, डायरी, आत्मकथा, यात्रावृत्त, रेखाचित्र, रागकाव्य, लहरीकाव्य, नवगीत, ललित निबन्ध आदि। संस्कृत ग़ज़ल लेखन भी इसी समय प्रारम्भ हुआ।

ग़ज़ल की परम्परागत अवधारणा कई हज़ार साल पुरानी है इसीलिए किसी काव्य को ग़ज़ल तभी कहा सकता है जिसमें ग़ज़ल की विभिन्न शिल्पगत मान्यताओं का निर्वहण किया गया हो|

प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी ने अपने एक व्याख्यान में कहा है कि "संस्कृत में ग़ज़ल के लिए गजलम्, गजलकाव्यम्, तथा गजलकृति शब्द भी प्रयोग देखने को मिला है |" प्रो.अभिराज राजेन्द्र ने ग़ज़ल को 'गलज्जलिका', डॉ.हर्षदेव माधव ने 'गझल' कहा है |

ग़ज़ल अरबी भाषा का स्त्रीलिंग शब्द है। जिसका शाब्दिक अर्थ सूत काटना, रस्सी बटना या धागे से है |[1] कुछ विद्वान ग़ज़ल का सम्बन्ध अरबी के ही एनी शब्द 'ग़ज़ाल' से मानते हैं-जिसका अर्थ है-मृग |[2] ग़ज़ल के उद्भव को लेकर दूसरा महत्वपूर्ण मत उसे ईरानी लोकगीत 'चाम' से जोड़ता है |'चाम' ईरान का लोकगीत है जैसे उत्तर प्रेदश का कजरी,सोहर आदि |

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

विद्वानों के अनुसार अरब में ग़ज़ल नाम का एक कवि रहता था, जिसने अपनी सारी आयु प्रेम और मस्ती में बिता दी। उसकी कविताओं का विषय सदैव प्रेम की भावना से ही परिपूर्ण हुआ करता था। अतः कालान्तर में इस ग़ज़ल नामक कवि के नाम पर इस प्रेमपरक कविताओं को ग़ज़ल की संज्ञा दी गई है |[3]

स्त्रियों के लिए प्रयुक्त होने पर इसका अर्थ होता है-स्त्रियों से प्रेम-मोहब्बत की बातें करना, उनके सौन्दर्य की प्रसंशा करना, उसके साथ रंगरेलियाँ करना आदि। इस पर विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने मत रखें हैं लेकिन सर्वाधिक प्रचलित प्रेमिका से वार्तालाप को ही माना गया है।

ग़ज़ल शब्दों एक ऐसा समूह है जिसमें एक ही बहर (छन्द) और वजन (मात्रा) में लिखे गए शेर होते हैं। एक शेर में दो मिसरे (पंक्ति) होते हैं | इसके पहले शेर को मतला (आरम्भिका) कहते हैं और अंतिम शेर को मक्ता (अन्तिका या उपसंहार) जिसके अन्तिम शेर में कवि या शायर का नाम (उपनाम या तखल्लुस)होता है। बीच के शेर को (मध्यिका) कहते हैं | वस्तुत: ग़ज़ल एक असम्बद्ध कविता है। इसमें सामान्यत: 5 से 20 शेर होते हैं। प्रत्येक शेर अपने आप में स्वतन्त्र होता इकाई है। शेर को प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी ने पंक्ति या चरण भी कहा है | परन्तु रदीफ़ (अन्त:श्रुति अथवा समान्त), काफ़िया (उपान्तश्रुति अथवा तुकान्त) के इसमें एकजुटता नजर आती है।

साहित्य में ग़ज़ल के दो रुप देखने को मिलते हैं-इश्के हकीकी और इश्के मिजाज़ी | इश्के हकीकी का तात्पर्य अलौकिक प्रेम से है और इश्के मिजाज़ी लौकिक प्रेम को कहते हैं | मुकम्मिल ग़ज़ल, बे मतला ग़ज़ल, बे मकता ग़ज़ल, तकआयुक्त ग़ज़ल इत्यादि ग़ज़ल के मुख्य प्रकार हैं |

'अभिराजयशोभूषणम्' में संस्कृत गलज्जलिका की तकनीकी व्याख्या करते हुए प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र लिखते हैं कि संस्कृत गज़ल के लिए भी मतला, मक्ता, बहर आदि अनिवार्य हैं |

गज़ल की तकनीक 'बहर' के विषय में लिखते हुए आपने कहा है-

विविधो बन्ध विस्तारो दृश्यतेऽत्र हि गीतके।

बन्धदैर्ध्यपरस्सोऽयं फारस्यां बहरो मतः ॥[4]

अर्थात् अनेक प्रकार का बन्धविस्तार इस गीत में दृष्टिगोचर होता है। बन्ध की दीर्घता को दर्शाने वाला यह विस्तार फारसी साहित्यमें बहर के नाम से जाना जाता है।

फारसी ग़ज़ल में बहर की गण व्यवस्था उसी प्रकार सुशोभित होती है जैसे संस्कृत कविता में गणों के अक्षर विस्तार की व्यवस्था होती है यथा -

संस्कृतेऽक्षरविस्तारे गणानां यादृशी स्थितिः।

बहरेऽपि तथैवाऽस्ते कश्चिद्रम्यो गणक्रमः ||[5]

वाग्वधूटी नामक अपनी कृति में 'गलज्जलिका' का अर्थ करते हुए प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने लिखा है कि-

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

उर्दू भाषायां यदेवगीतं 'गजल' पदेन व्यवहियते तदेवमया संस्कृत भाषायां गलज्जलिकेतिसमुच्यते। अस्मिन् गीते प्रायेण मर्मस्पृशो भावा नवनवोत्प्रेक्षणार्थच्छलादिसंवलिता मध्यस्थीक्रियन्ते। काऽपिप्रियजनप्रवञ्चनोत्थापीडा निसर्गजयोगमेक्षविनाशिनी नियतिनटीलीलैववाऽस्मिन् गीते लक्ष्यंभवतियच्छावं श्रावं पाठं पाठं साधारणीकरणक्लेन सहृदया निरर्गलाश्रुपूरितनयनाः सन्दृश्यन्ते। अतएव'गलन्ति जलानि नयनाश्रुणि यस्यां सा गलज्जलिकेति, मयाऽभिनवं समुत्प्रेक्षयते। ज्ञात्वाविपश्चितः प्रमाणमितिदिक्।

प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने अपने काव्यशास्त्र'अभिराजयशोभूषणम्' में भी गलज्जलिका को स्पष्ट करते हुए कहा है कि-

श्रावं श्रावच गीतार्थनयने वारि वर्षतः।

ध्रुवं हर्षविषादाभ्यां सचेता यदि पाक: ||[6]

अर्थात् गज़ल से तात्पर्य उस विधा से है जिसको सुनने में और पढ़ने में श्रोताओं का हृदय रूपी हिम पिघलने लगे और वह हर्ष एवं विषादरूप उष्णता से पिघलकर आँसू के रूप में बहने लगे।

तत एवं मया गीतिराख्यातेयं गलज्जला।

गलन्नेजलत्वाद्वा सा गलज्जलिका पुनः ||[7]

इसी कारण से कवि मिश्रने इसे गलज्जला व अश्रुवृष्टि करने के कारण गलज्जलिका नाम प्रदान किया।

अर्थात् गलन्ति जलानि नयानाश्रूणि यस्यां सा गीतिर्गलज्जलिका ||[8]

कुछ विद्वान ग़ज़ल का सम्बबन्ध अरबी के अन्य शब्द 'ग़ज़ाल' से मानते हैं, जिसका अर्थ है- मृग। अत: हो सकता है कि छन्दोंमय कविताओं को ही ग़ज़ल की संज्ञा से जाना जाने लगा हो, परन्तु ग़ज़ल का अर्थ व्युत्पत्ति विषयक सम्बन्ध ग़ज़ल या मृग से जोड़ना समाचीन नहीं प्रतीत होता क्योंकि भारत में मृग के नेत्र की सुन्दरता की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ अवश्य ही दिखाई देते हैं, जबकि अरब या ईरान में नरगिसी नेत्र को महत्व दिया जाता है अतः यह तथ्य शान्तिपूर्ण प्रतीत होता है।"

ग़ज़ल प्राचीन एवं लोकप्रिय विधा है। ग़ज़ल प्रेमाभिव्यक्ति के लिए भी शक्तिशाली एवं प्रभावशाली है। अनेक विद्वानों ने अपनी दृष्टिकोण से ग़ज़ल को परिभाषित किया है।

वृहत हिन्दी कोश के अनुसार- "फ़ारसी उर्दू मुक्तक काव्य का एक भेद जिसका प्रधान विषय प्रेम होता है।"

हिन्दी साहित्यकोश भाग-एक में कहा गया है –"ग़ज़ल में प्रेम भावनाओं का चित्रण होता है, ग़ज़ल का शाब्दिक अर्थ है, नारियों के प्रेम की प्रेम की बातें करना "||[9]

प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी के अनुसार-

द्विपदिकाभिर्निबद्धा गीतिर्गजलमुच्यते ||[10] (अभिनवकाव्यालङ्कारसूत्रम् 3/1/9)

Knowledgeable Research ***ISSN 2583-6633*** **Vol.02, No.02, September, 2023**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

राजस्थान के प्रसिद्ध कवि और साहित्यकार श्रीकल्ला जी वैदिक विश्वविद्यालय, निम्बाहेडा, राजस्थान के कुलपति प्रो. ताराशंकर शर्मा पाण्डेय ने ग़ज़ल को 'गज्जलिका' कहा है | उनके मत के अनुसार- 'गज्जलिका' शब्द गज्+जलिका दो शब्दों से मिलकर बना है | यहाँ गज का अर्थ है मदमस्त होना, ध्वनि करना (अनुरणनात्मक ध्वनि करना) और जलिका का अर्थ है उस ध्वनि को जीवित करने वाली | यानी अनुरणनात्मक ध्वनि के साथ जो आनन्द की अनुभूति कराती है, वह है 'गज्जलिका' |

उन्होंने ग़ज़ल का लक्षण (फेसबुक पर) इस प्रकार दिया है -

" नानावृत्तमयी मतान्तिमपदा, पद्यान्तनित्योत्सवा।

वित्ता गज्जलिका द्विपादवलयाऽ- संख्यातभू: संस्कृता ॥ "

अर्थात् गज़ल ऐसी होनी चाहिए, जो --

नानावृत्तमयी= अनेक वृत्त (छन्द और घटनाक्रम वाली)| मता अन्तिमपदा=अन्तिम पद होना चाहिए (काफ़िया) | पद्यान्तनित्योत्सवा= पद्य के अन्तिम चरण में पदान्त नित्य उत्सव वाली यानी तुकान्त होना चाहिए | वित्ता=प्रसिद्ध , इस तरह से जानी जाती है। द्विपादवलया=दो चरणों/ पंक्तियों वाली | असंख्यातभू:=अनगिनत छन्दों और घटनाओं से उत्पन्न होने वाली | संस्कृता=संस्कृत की ग़ज़ल होनी चाहिए। इस प्रकार प्रो. ताराशंकर शर्मा पाण्डेय द्वारा की गई गज़ल की परिभाषा अपने आप में पूर्णता लिए हुए है।

भुबनेश्वर के सुप्रसिद्ध कवि प्रो.सुरेन्द्र मोहन मिश्र ने ग़ज़ल को 'गजलम्' कहा है और इसका लक्षण (फेसबुक पर) इस प्रकार दिया है

गन्धर्वगानं जयतीह गीतं दीप्त्या समाह्लादकमद्भुतोर्जम्।

ख्यातं हि लोके गजलं कवीनां मित्राक्षरञ्चान्तिमपादपद्ये॥

ग: गं = गन्धर्व: गानम्। ज: जं = जय: गीतम्। ल: = दीप्तिराह्लादनम्। तेन गजलमित्यस्तु। कथं गज्जलिका गलज्जलिकेति कल्पना।

उर्दू हिन्दी शब्द कोश के अनुसार – " प्रेम से वार्तालाप, उर्दू फ़ारसी कविता का एक प्रकार विशेष जिसमें प्राय: 5 से 25 शेर होते हैं। सारे शेर एक ही रदीफ में और काफिये में होते हैं। और हर शेर का विषय अलग होता है। पहला शेर 'मत्ला' कहलाता है जिसके दोनों मिसरे सानुप्रास होते हैं, और अन्तिम शेर 'मक्ता' होता है किसमें शायर अपना उपनाम (तखल्लुस) लेता है।"

गोपालदास नीरज के शब्दों –" ग़ज़ल की परिभाषा वो है जो काव्य की रसमय विधा जो सूक्ष्म हो और जो संकेतों की भाषा में बोलती हो।"

प्रसिद्ध ग़ज़लकार डॉ.कुँवर बेचैन के मत में-" एक से रदीफ तथा भिन्न – भिन्न काफियों से सुसज्जित एक ही वजन तथा एक ही बहर में लिखे गये अलग – अलग शेरों के समूह को ग़ज़ल कहते हैं "||[11]

Knowledgeable Research ***ISSN 2583-6633*** **Vol.02, No.02, September, 2023**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

फिराक गोरखपुरी के मतानुसार- “जब कोई शिकारी जंगल में कुत्तों के साथ हिरण का पीछा करता है और हिरण भागते-भागते किसी ऐसी झाड़ी में फँस जाता है, जहाँ से वह निकल नहीं सकता, उस समय उसके कण्ठ से एक दर्द भरी आवाज निकलती है। इसी करुण स्वर को ग़ज़ल कहते हैं ” ||[12]

शिव ओम अम्बर ने गजल को परिभाषित करते हुए लिखा है कि –“आज की ग़ज़ल किसी नाज़नीन की उंगली हथेली पर अंकित मेहन्दी की दन्तकथा नहीं, युवा आक्रोश की मुट्ठी में थमी हुई प्रलयकारी मशाल है। यह रनिवास की स्त्रियों के साथ की गई किसी रसिक की रतिवार्ता नहीं, भाषा के भोजपत्र पर विप्लव की अग्निऋचा है। गुलाब की पंखुड़ियों पर क्रान्ति की कारिका लिपिबद्ध करने का संकल्प है।”

सृष्टि रचना से ही जीव अपने विपरीतलिंगी के प्रति आकर्षित हुआ है वह चाहे मनुष्य हो या फिर जानवर | वेदों में ऐसे बहुत सारे आख्यान भरे पड़े हैं | जहाँ पर कभी पुरुष प्रणय के लिए स्त्री को रीझता है या कभी स्त्री प्रेम पाने के लिए पुरुष पर रीझती है | प्रेम के बिना यह सारा संसार सूना है | प्रेम एक शाश्वतभाव है जो कल भी था, आज भी है और कल भी रहेगा | वास्तव में प्रेम जीवन के लिए अति आवश्यक है, उसके अभाव में जीवन या तो रेत है या पत्थर | अरबी, फ़ारसी उर्दू, तथा हिन्दी की तरह ही संस्कृत के कवियों ने भी इस विषय पर खूब लिखा है | यथा-

आचार्य भट्ट मथुरानाथ शास्त्री ‘मञ्जुनाथ’ की ग़ज़लों से गुजरने पर पाया जाता है कि इनकी ग़ज़लें परम्परा और आधुनिकता के बीच सेतु बनकर उभरती हैं-

नन्दनन्दन हे मुकुन्द मनोऽरविन्दमुपेहि मे।

एतदभ्युदितानुरागमिलन्मरन्दमवेहि मे ||[13]

xxx

अयि चित्त! चिरेण विचिन्तयतोऽपि च चञ्चलता न गता न गता।

अपि नाम निरन्तरयत्नशतैस्तव निष्ठुरता न गता न गता।।

कियदिच्छसि निर्भरशान्तिसुखं न नियच्छसि पादमथाभिमुखम्।

अयि गच्छसि साधुपथाद्विमुखं तव निष्क्रियता न गता न गता ||[14]

आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री की ग़ज़लें समकालीन यथार्थ से पूर्णत: अवगत जान पड़ती हैं। हमारे समाज में उपस्थित विभिन्न चुनौतियाँ, विसंगतियाँ इनके शेरों में ढलकर पाठक से रूबरू होती दिखती हैं।

नि:स्वं निरात्मविश्वमिदं पाति भारतम् |

मैत्रीस्पृशा दृशास्ति जितारातिं भारतम्||

Knowledgeable Research ***ISSN 2583-6633*** **Vol.02, No.02, September, 2023**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

आचार्य बाबूराम अवस्थी की कुछ ग़ज़लें इस प्रकार हैं -

द्विरुक्त: सम्भ्रमं तन्वीत नम्रास्ये नकारस्ते |

जनं स्वीकारपक्षे पातयत्येष प्रकारास्ते ||

x x x

प्रणीपातावधिं भावं निराहु: प्राक्तना: सत्यम् |

पटे सर्वाङ्गलीनाया कूत: पादोपचारस्ते ||[15]

आचार्य बच्चूलाल अवस्थी की कुछ ग़ज़लें इस प्रकार हैं –

दृशोरावर्जका: कल्याणि संभारा: क्व यातास्ते

हृदि स्फूर्जां वितन्वाना अलङ्कारा: क्व यातास्ते ||

शिरो वक्षोजयोराधाय मे केशेषु साकूतम्

स्मितर्विद्योतमाना अङ्गुलिचारा: क्व यातास्ते ||[16]

प्रो.हरिदत्त शर्मा की ग़ज़ल का एक उदाहरण इस प्रकार हैं -

जीवामि वा म्रियतेऽहं प्रतिदिनं न जाने |

मज्जामि सागरेऽहं प्रवहमिदं न जाने ||[17]

डॉ.वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य की ग़ज़ल का एक उदाहरण है -

पदार्पणं ते मामके हि मार्गे यावान्न मृगप्रेक्षिणि

स्टोकं न जातं धूलिकीर्णभूमौ नेत्रोल्लसनं शाद्वलम् ||

वन्ध्या वनानी मर्म मे दुनोति स्तब्धा बत कल्लोलिनी

नाकार्णितं वा यौवनार्तकुंजे वासन्तरुतं विह्वलम् ||[18]

डॉ.इच्छाराम द्विवेदी 'प्रणव' की ग़ज़ल का एक उदाहरण है

धनुस्ते कीदृशं कियद्दभुतं बन्धो ! कथं जाने?

विना नाराचसन्धानं व्रणं कुरुते कथं जाने ||

विचित्रं कौतुकं कुरुते त्वदीयं विस्मरणवृत्तं

Knowledgeable Research ***ISSN 2583-6633*** **Vol.02, No.02, September, 2023**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

भृशं समुदेति ते ध्यानं सखे हृदयं कथं जाने ||[19]

डॉ.*जनार्दन पाण्डेय 'मणि'* की ग़ज़ल का एक उदाहरण है

त्वदीयाऽऽनने पूर्णचन्द्रप्रभेयं नरीनृत्यते किम् |

लसन्नेत्रयो; स्वप्नगाथा सुखनां जरीनृत्यते किम् ||

हता कुन्तलैस्ते घटा कृष्णवर्णाऽऽभमेघोत्तमानाम् |

सरागेऽधरे स्निग्धता पल्लवानामथोद्भासते किम् ||[20]

डॉ.जगन्नाथ पाठक की ग़ज़लें उनकी पिपासा आदि संकलनों में निबद्ध हैं आप का ग़ज़ल विधा पर असाधारण अधिकार है वे प्राचीन ग्रन्थों की पंक्तियों को प्रयुक्त करते हुए भी उन्हें बहुत सुंदर तरीके से ग़ज़ल में ढाल देते हैं यथा-

त्वं मदन्तिके येषु ते हि नो गता दिवसा:
किं प्रतीक्षया तेषां ते हि नो गता दिवसा: ||

प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र एक परिपक्व ग़ज़लकार हैं, जो ग़ज़ल-लेखन में कथ्य और शिल्प के प्रति सदैव सजग रहते हैं। उनकी ग़ज़लें परम्परागत उर्दू ग़ज़ल से अनेक स्तरों पर मुक्त होकर अपनी नयी कहन अर्जित करने का प्रयत्न कर रही हैं। उनका यह प्रयत्न सीधे-सीधे आमजन के सुख-दुःख और संघर्षों के इर्द-गिर्द परिचालित हुआ है, जो उनकी पुख्ता ज़मीन भी है। कथ्य की दृष्टि से इस संग्रह की ग़ज़लों में प्रेम, प्रकृति और परिवेश की विसंगतियों को बड़े प्रभावी अंदाज़ में प्रस्तुत किया गया है। उनके शेर इतने मार्मिक और अनूठे हैं कि प्रत्येक शेर पाठक के दिल में आकर जैसे बैठ जाता है।

चिन्तनीयं सदा मङ्गलं मङ्गलम्

वर्तनीयं सदा मङ्गलं मङ्गलम्!! ||[21]

xxx

क्व गता प्रिये! त्वदीया प्रीतिः

सम जीवनाय रम्या गीतिः!! ||[22]

xxx

आसाद्य मामकीनं सदनं न मोदते कः?

आलोक्य वर्तमानं विगतं न ढौकते कः??

xxx

नन्दनायै न जीवनं जातम्

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

वन्दनायै न जीवनं जातम्!!

मन्दिरे राक्षसी समाविष्टा

अर्चनायै न जीवनं जीतम्!! ||[23]

आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी एक संवेदनशील लेखक हैं। वे कविता और गद्य दोनों में सामर्थ्य के साथ अपनी रचनाओं को अभिव्यक्त करते हैं | आचार्य त्रिपाठी जी ने आम आदमी की पीड़ा, निराशा, घुटन, दर्द को मार्मिक रूप से अपनी ग़ज़लों में अभिव्यक्त किया है। आचार्य राधा वल्लभ त्रिपाठी जन-जन की सूक्ष्म संवेदनाओं के मर्म को पहचानने वाले लेखक हैं | कवि ने कम से कम शब्दों में प्रवाहपूर्ण सारगर्भित बात कही हैं |

रक्तरंगे त्वया रंजिता चोलिका।

ऐषमः कीदृशी मानिता होलिका।।

अत्र दग्धा गृहा दह्यते देहली,

तत्र साधो त्वया राधिता होलिका ॥[24]

डॉ.महराजदीन पाण्डेय की ग़ज़ल आज के समय की विडम्बनाओं का दस्तावेज बन जाती है-

निर्वाचनस्य रंगे नटितेन तेन मुषितम्।

कस्यापि तेन रुदितं कस्यापि तेन हसितम्।।

नाट्ये न शान्तरस इति यत्प्रयोक्तमस्ति तन्न

किं किं न प्रेक्षणीयं धर्मस्थले विलसितम् ॥[25]

(डॉ.महराज दीन पाण्डेय) जब दो जून की रोटी के जुगाड में सारी जिन्दगी रीती जा रही हो तो चालाकी कहां से आयेगी-

चिन्तया रोटिकाया हता चातुरी।
तैल लवणस्य योगे गता चातुरी।। ॥[26]

डॉ.महराज दीन पाण्डेय राजनीति पर करारा व्यंग्य करते हुए कहते हैं कि गाओ क्योंकि गाने से दो लाभ होंगे, गाने से राजा खुश तो होगा ही साथ ही उस निर्दयी राजा को सहन करने की शक्ति भी मिलेगी-

गाय गानेन हृष्यते राजा।

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

कालकुटिलोऽपि मृष्यते राजा।।
मतान्यदाम सेवकं चेतुं
संसदा नः प्रदिश्यते राजा।। ।।[27]

डॉ.पुष्पा दीक्षित व्याकरण पर असाधारण अधिकार रखती हैं। वे व्याकरण के विशिष्ट प्रयोगों से काव्य को अलंकृत कर देती हैं |नामधातुओं का कितना सुन्दर उपयोग इस अन्त्यानुप्रास युक्त कविता में किया गया है-

वीतरागता यदा तदा गृहं वनायते।
त्वं प्रतीयसे यदा तदा जगत् तृणायते।।
ये कषायवाससोऽपि मानसे कषायिताः।
ते विशन्ति यत्र तत् तपोवनं रणायते ।।[28]

डॉ.बलराम शुक्ल संस्कृत के साथ साथ फारसी के भी अनुपम जानकार हैं उन्होंने कई गजलों का संस्कृत में अनुवाद भी किया है आपकी एक ग़ज़ल का अंश है-

क्व याता हे प्रयाता: सत्यमाप्तुम्
तदर्थं सज्जपादा: कण्टकारण्ये प्रयातुम् ।।[29]

डॉ.विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र 'विनय' ने अपनी ग़ज़लों में अपने जीवन के कई अनुभवों को समेटने की कोशिश की है। रोज़मर्रा के जीवन के कठिन अनुभवों को कविताओं में पिरोया हैं। कवि वर्तमान समाज की विडम्बनाओं को प्रकट करते हुए कहते हैं-

परम्परा विकम्पितान्तराधुना विधूयते
व्यथाकथा पुरातनी पुनर्नवानुभूयते

न दृष्टिमेति रामराज्यरंजितान्वयस्थिति-
र्गृहे गृहे दशास्यविग्रहप्रथा प्रसूयते ।।[30]

डॉ.लक्ष्मी नारायण पाण्डेय संस्कृत ग़ज़ल में एक जाना पहचाना नाम है | हाल ही में उनका 'लोकयात्रेयम्' ग़ज़ल संग्रह (प्रथम संस्करण 2022 में सत्यम् पब्लिकेशन दिल्ली) प्रकाशित हुआ है| इसकी कुछ ग़ज़ले इस प्रकार है -

कविर्नाहि कविर्नाहं कविर्नाहं मतं ध्रुवम् ।

स्वान्तः सुखाय शब्दैस्तु खेलनं व्यसनं मम ।।

अर्थवन्त इमे वर्णाः सिद्धान्तो वर्तते स्तुतः ।

तस्मादेवार्थलाभाय पठन्त्वत्र ममाशयम् ।।पृष्ठ 4

x x x

Knowledgeable Research ISSN 2583-6633 Vol.02, No.02, September, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

वर्तते चञ्चलं कोमलं मन्मनः

याचतेऽहर्निशं रञ्जनं मन्मनः ।

ईहते हा शिलासन्निभे मानसे

मन्दमन्दं मधुस्पन्दनं मन्मनः ।

प्रेषितञ्चैकधा यत्प्रिया सन्निधौ

नागतं तत्पुनस्तादृशं मन्मनः ।

स्तब्धताभीतिभीते निशीथेधुना

चन्दिरं स्प्रष्टुमाकांक्षतीदं मनः ।

यत्र गन्तुं न पादौ मनागिच्छतस्

तत्र गन्तुं बलाच्चेष्टते मन्मनः ।

मंजरीचुम्बनोत्कं द्विरेफ' स्मरज्

जायते हा भृशं विह्वलं मन्मनः ।

यन्निदाघे सुतप्ते गतं संस्मरत्

कल्प्यते माधवोन्मादनं मन्मनः |पृष्ठ 160

x x x

भारते भारती किङ्करी दृश्यते

जीवनान्निर्गता माधुरी दृश्यते ।

चाटुचर्चार्चिता चातुरी चर्चिता

अर्थहीनाधुना वैखरी दृश्यते ।

सन्ततिश्शोकमग्ना मुनीनामहो

श्रीविहीना कथं जित्वरी दृश्यते ।

कीर्तिता रत्नगर्भा धरानन्ददा

दीनहीना स्तुता शाङ्करी दृश्यते ।

Knowledgeable Research ***ISSN 2583-6633*** **Vol.02, No.02, September, 2023**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

भाषणेषु प्रजाराधनं श्रूयते

वृत्तिराराधिता ह्यासुरी दृश्यते।

पीड्यमाना द्विरेफैर्भृशं लोलुपैर्

मूर्च्छिता माधवे मञ्जरी दृश्यते।

मध्यधारागतोत्तुङ्गवीचीषु हा

कम्पमाना स्खलन्ती तरी दृश्यते॥ पृष्ठ 29

समकालीन संस्कृत ग़ज़ल में जब कभी शायरी के फ़न से गुज़रते हुए शायर की तलाश की जाएगी डॉ.हर्षदेव माधव वहीं उसके सिरहाने खड़े मिलेंगे। वह यक़ीनन हमारे दौर में ग़ज़ल में नया कहने और गढ़ने वाले प्रतिनिधि और अलाहिदा शायर हैं, जिनसे संस्कृत ग़ज़ल को काफ़ी उम्मीदें वाबस्ता हैं।

क्वचित् शङ्कुला जाता क्वचित् हर्षाकुला जाता |

मति मे मामकान् दृष्ट्वा सदा स्वार्थाकुला जाता ||[31]

शायर, ग़ज़लकार डॉ.रामविनय सिंह ने जिस तरह संस्कृत कविता में अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज की है, उसी प्रकार शायरी और ग़ज़ल लेखन में भी दमदार हैं। हर लेखक या कवि अपने भीतर की हलचल को अभिव्यक्ति देना चाहता है, उसके सामने साहित्य की विधाओं के द्वार खुलने लगते हैं। चुनाव उसे ही करना है कि किस विधा में स्वयं को अभिव्यक्त करे।

सखे!परितो ज्वलद्ग्रामं विशीर्णं पश्य पानीयम्!

तृषादग्धे निशीथे द्वारि तिष्ठति कस्य पानीयम्!!

नभो नीलं प्रयच्छति कदा कस्मै किमपि लोकेऽस्मिन्,

जनानां द्रवच्चीत्कारं प्रतनुतेऽवश्यपानीयम्! ||[32]

डॉ.कौशल तिवारी ख़ामोशी, ईमानदारी और ज़िम्मेवारी से ग़ज़ल कहने वाले जेनुइन (असली) शायर हैं। हिन्दी और संस्कृत के शायर और आलोचक दोनों में उनका मुक़ाम सरे फ़ेहरिस्त है। उनकी शायरी हर उस आदमी की ज़ुबान की शायरी है जिसने अपना कुछ खोया है, जिसके पास तकलीफ़ें हैं और जिसके दिल में मोहब्बत और चाहत है।

नवपापाय तत्परोऽस्मि

गंगाजलेन स्नातोऽहम् ||[33]

'अद्यापि' मे' वे लिखते हैं कि आप सारे संसार में घूम लो पर जो आनन्द और सुख घर में प्राप्त होता है वह दुनिया के किसी कोने में नहीं मिल सकता।

Knowledgeable Research ***ISSN 2583-6633*** **Vol.02, No.02, September, 2023**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

प्रेमपूरित लोचनयो: प्रिये

तिवारिणा लब्धं जीवनमद्यापि ||[34]

'कालोऽयम्' कविता में तिवारी लिखते हैं कि समय का चक्र अपनी गति से चलता रहता है। इस पर किसी का वश नहीं है। इसकी गति अबाध है।

अज्ञातलिप्यां मनुजललाटे

किं किं तत् यन्न कालोऽयम् ||[35]

डॉ.प्रवीण पण्ड्या की ग़ज़लों की एक बड़ी विशेषता उनका भाषाई संस्कार है। वह बड़ी सहजता और सरलता के साथ गंभीर बातें कर लेते हैं।

कुत: केनापि कोऽयं देहबन्ध:

कृतो येनापि योऽयं देहबन्ध: ||

वचोभिर्भाषते पण्ड्या प्रभूतं

कृतौ दोषदूषितोऽयं देहबन्ध: ||[36]

x x x

तपसे स्वबलं न ते धरन्ते

असुरा: सुरतां न ते लभन्ते ||[37]

समकालीन संस्कृत ग़ज़ल का नाम लेते ही जो कुछ चेहरे अकस्मात् हमारे ज़ेहन में आते हैं, उनमें एक नाम डॉ.राजकुमार मिश्र का भी है। डॉ.राजकुमार मिश्र के पास ग़ज़ल की शैली है, लबो-लहजा है। ग़ज़ल का मुहावरा है। भाषागत सौन्दर्य है और अपने प्राप्त किए हुए अनुभवों को प्रस्तुत करने का तौर-तरीक़ा और सुलझा हुआ सलीक़ा है। उनके अशआर में रोज़मर्रा की बातें हैं उनके प्रतीक और शब्द जाने-पहचाने हैं | ऐसा इसलिए कि उन्हें पता है कि संस्कृत की ग़ज़ल राजदरबारी नहीं है न वो किसी हरम की जीनत का हिस्सा ही है। बल्कि यह हमारी ज़रूरत है।

वयोभिश्चाल्पमात्रैस्ते 'कुमारा:'।

कुतो जानन्ति केलिं वृद्धचिन्ता ||[38]

आजकल के कुँवारे छोटी उम्र में ही (विद्यालय की पढ़ाई छोड़कर) प्रेम प्रसंग में मशलूल हैं इसलिए बुजुर्गों को चिन्ता है।

इमा या हन्त जीवन्त्यो मृता बाला बलात्कारै:

व्यथावस्त्रै: परिछिन्नान् शवान् तासां प्रपश्येत् क:? ||[39]

Knowledgeable Research ***ISSN 2583-6633*** **Vol.02, No.02, September, 2023**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

वे कन्याएँ जो राक्षसों के द्वारा किये गये बलात्कार से जीते जी ही मर गईं उनके व्यथारूपी वस्त्रों से ढके हुए लाशों को भला कौन देखे?

डॉ.संस्कृता मिश्रा की ग़ज़लें उनके साहस की सूचना देती है नारी शक्ति को अभिव्यञ्जित करती हैं -

पाषाणपथै: न बिभेमि सखे
घनभानुकरै: न बिभेमि सखे
कालेऽहं विनययुतास्मि परं
गर्जन शब्दैर्न बिभेमि सखे ||[40]

प्रो.ताराशंकर शर्मा पाण्डेय ने भी हाल ही में ग़ज़ल लिखना प्रारम्भ किया है | कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

कास्ते कान्तिसमुज्ज्वलातिललिता तारोद्भवा वैखरी।

ताराभूतिभवादिमुख्यकविता सा शांकरी वैखरी।।1।।

शब्दार्थोभयसिद्धभावविशदा संश्रूयते वैष्णवी।

कण्ठोद्भूतनिनादशब्दजनिता वाणी खरी वैखरी।।2।। (फेसबुक से)

x x x

लक्ष्यं किं वद संस्कृतानुसरणं शार्दूलपृष्ठे स्थिता।

पुच्छं त्वं परिमुच्य खे गज़ल हे शार्दूलपृष्ठे स्थिता।।1

विद्वत्तल्लजमूर्तिचित्तरमणी

काव्याञ्चलावस्थिता।

नूत्नप्राणधरा नवीनपदवी त्वं कासि पृष्ठे स्थिता।।2

छन्दोव्यूहगृहप्रविष्टहृदया स्वातन्त्र्यकामाऽभवम्।

तद्धे मित्र गतिर्मती रतिपरा सम्प्राप्तपृष्ठे स्थिता।।3 (फेसबुक से)

x x x

· कान्तारूपमहोद्धुतं सहृदयै: पेपीयते चाक्षुषम्।

नाट्योद्भूतगुणोज्ज्वलं मधु जनैरास्वाद्यते चाक्षुषम्।।1।।

दु:खाधारधरा मनोविलसिता कान्ता नवास्ते न वा।

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

कान्तैर्वाष्पजलं वियोगजनितं सन्धार्यते चाक्षुषम्।।2।। (फेसबुक से)

x x x

राष्ट्रे दिव्ये भारते जन्म जाने।

पौन:पुन्यं जन्म जाने न जाने।।1।।

नामं नामं भारतं जन्मभूमिम्।

प्राणान् मोक्ष्ये तत्र जाने न जाने।।2।।

आस्ते देहो धन्यधन्यो मदीय:।

राष्ट्रं रक्ष्यं तेन जाने न जाने।।3।। (फेसबुक से)

x x x

राष्ट्रे दिव्ये भारते जन्म जाने। पौन:पुन्यं जन्म जाने न जाने।।1।।

नामं नामं भारतं जन्मभूमिम्।

प्राणान् मोक्ष्ये तत्र जाने न जाने।।2।।

आस्ते देहो धन्यधन्यो मदीय:।

राष्ट्रं रक्ष्यं तेन जाने न जाने।।3।।

आत्मा भूमे! तेऽधमर्ण: सदैव ।

दासीभूतो दैव! जाने न जाने।।4।। (फेसबुक से)

x x x

मध्य प्रदेश (भोपाल) के डॉ.लक्ष्मी नारायण पाण्डेय की ग़ज़ल इस प्रकार है | जो इनके 2022 ई. में प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह ‘विदग्धा लोकयात्रेयम्’ से ली गयी है |

भारते भारती किङ्करी दृश्यते

जीवनान्निर्गता माधुरी दृश्यते ।

चाटुचर्चार्चिता चातुरी चर्चिता

अर्थहीनाधुना वैखरी दृश्यते ।

Knowledgeable Research ***ISSN 2583-6633*** **Vol.02, No.02, September, 2023**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

सन्ततिश्शोकमग्ना मुनीनामहो

श्रीविहीना कथं जित्वरी दृश्यते।

कीर्तिता रत्नगर्भा धरानन्ददा

दीनहीना स्तुता शाङ्करी दृश्यते।

भाषणेषु प्रजाराधनं श्रूयते

वृत्तिराराधिता ह्यासुरी दृश्यते।

पीड्यमाना द्विरेफैर्भृशं लोलुपैर्

मूर्च्छिता माधवे मञ्जरी दृश्यते।

मध्यधारागतोत्तुङ्गवीचीषु हा

कम्पमाना स्खलन्ती तरी दृश्यते॥ पृष्ठ 29

भुवनेश्वर केप्रो.सुरेन्द्र मोहन मिश्र की कुछ ग़ज़लें इस प्रकार हैं –

गजलमेव तद्गानमद्भुतं

जनयदन्तरे प्रीतिदामृतम्॥1॥

लसतु संस्कृतारामचत्वरे

स्वमहिमासवं प्रेक्षकादृतम्॥2॥ (फेसबुक से)

निष्कर्ष-सारांशत: कहा जा सकता है कि समय के साथ रचनाकार की लेखनी भी परिवर्तित होती रहती है | पहले जो ग़ज़लें प्रेमालाप के लिए प्रसिद्ध थी, अब वही सामाजिक चेतना (मानवीयमूल्य, महानगरीय जीवन, पारिवारिक जीवन, असुरक्षा और भय, आम आदमी की पीड़ा, समाज की बिगड़ती स्थिति, वर्ग वैषम्य, रूढ़िवाद का विरोध, दलित चेतना, नारी चेतना, राजनीतिक चेतना (भारतीय लोकतन्त्र,संसद का चित्रण,राजनीतिक विद्रुपता,स्वार्थी एवं भ्रष्ट नेता, लाल फीताशाही,चुनाव प्रणाली,राजनीतिक एकता एवं सामंजस्य, सांप्रदायिकता एवं आतंकवाद), वैयक्तिक चेतना (प्रेमाभिव्यक्ति,वेदना और निराशा,हर्ष और उल्लास,जीवन दर्शन, आशावाद, आत्मीयता) आदि के लिए विश्वविश्रुत हैं |

<u>सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची</u>

1.समकालीन हिन्दी ग़ज़ल पहचान और परख, डा.सएमा बानो, कला प्रकाशन हिमांचल प्रदेश,, 2013 ई., पृष्ठ संख्या 28
2.हिन्दी ग़ज़ल उद्भव और विकास, रोहिताश्व अस्थाना, पृष्ठ संख्या 22
3.समकालीन हिन्दी ग़ज़ल पहचान और परख, डा.सएमा बानो, पृष्ठ संख्या 29

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* **Vol.02, No.02, September, 2023**
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

4.अभिराजयशोभूषणम्, प्रो.अभिराज राजेनद्र मिश्र,वैजन्त प्रकाशन इलाहाबाद , संस्करण 2006 ई., पृष्ठ संख्या 284
5.वही पृष्ठ संख्या 284
6.वही पृष्ठ संख्या 283
7.वही, पृष्ठ संख्या 283
8.वाग्वधूटी, प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र, अक्षयवट प्रकाशन इलाहाबाद,संस्करण 1978 ई., पृष्ठ संख्या 75
9.हिन्दी साहित्य कोश, भाग-1,(पारिभाषिक शब्दावली), सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा,ज्ञान मण्डल लिमिटेड वारणसी,1963 ई., पृष्ठ संख्या 278
10.अभिनवकाव्यालंकारसूत्रम्, प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी,प्रकाशन सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी,संस्करण 2005 ई., पृष्ठ संख्या 150
11.हिन्दी ग़ज़ल का स्वरूप और महत्वपूर्ण हस्ताक्षर,डॉ.वशिष्ठ अनूप, पृष्ठ संख्या 15
12.हिन्दी ग़ज़ल एक यात्रा, साहत्यिक निबन्ध, सम्पादक त्रिभुवन नाथ सिंह,डॉ.विजय बहादुर सिंह,पृष्ठ 88
13.मंजुनाथग्रन्थावलि: (प्रथम भाग), सम्पादक प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रकाशन राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान नई दिल्ली, संस्करण 2010ई., पृष्ठ संख्या 295
14.वही, पृष्ठ संख्या 303
15.परिशीलनम्, शोध पत्रिका, जून 2017 ई., पृष्ठ संख्या 34
16.कल्पवल्ली, सम्पादक प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र, साहित्य अकादमी प्रकाशन दिल्ली,2018 ई., पृष्ठ संख्या 62
17.उत्कलिका , प्रो.हरिदत्त शर्मा, आंजनेय प्रकाशन इलाहाबाद, संस्करण 1989 ई., पृष्ठ संख्या 70
18.षोडशी, डॉ. वीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य, सम्पादक प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी, साहित्य अकादमी प्रकाशन दिल्ली, 1992 ई., पृष्ठ संख्या 17
19.गीतिमन्दाकिनी (प्रणवरचनावाली), डॉ.इच्छाराम द्विवेदी ‘प्रणव’, नाग प्रकाशन, दिल्ली, 1992 ई., पृष्ठ संख्या 301
20.कल्पवल्ली, त्वदीयाऽऽनने, सम्पादक प्रो.अभिराज राजेन्द्र मिश्र, साहित्य अकादमी प्रकाशन दिल्ली,2018 ई., पृष्ठ संख्या 573
21.http://www.sanskrit.nic.in/ASSP/mridvika/index.htm
22.http://www.sanskrit.nic.in/ASSP/vagvadhooti/index.htm
23.http://www.sanskrit.nic.in/ASSP/vagvadhooti/index.htm
24.https://vagarthaadhuniksanskrit.blogspot.com/
25.https://vagarthaadhuniksanskrit.blogspot.com/
26.https://vagarthaadhuniksanskrit.blogspot.com/
27.https://vagarthaadhuniksanskrit.blogspot.com/
28.https://vagarthaadhuniksanskrit.blogspot.com/
29. https://vagarthaadhuniksanskrit.blogspot.com/
30.https://vagarthaadhuniksanskrit.blogspot.com/
31.हिमसंस्कृतवार्ता: दैनिक ई समाचार पत्र, 20 अगस्त 2022 ई.
32.हस्ताक्षर ई मासिक पत्रिका, अक्टूबर 2019 ई.
33.स्मर्तव्योऽहं तदा डॉ.कौशल तिवारी,एजूकेशनल बुक सर्विस नई दिल्ली, संस्करण 2022 ई. पृष्ठ संख्या 25

Knowledgeable Research *ISSN 2583-6633* Vol.02, No.02, September, 2023
An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal

34.वही, पृष्ठ संख्या 28
35.वही, पृष्ठ संख्या 31
36.वही, पृष्ठ संख्या 32
37.अधरोंत्तमारणि,डॉ.प्रवीण पण्ड्या, तुहिना प्रकाशन कोलकाता, 2015 ई.पृष्ठ संख्या 100
38.वही,पृष्ठ संख्या 103
39.वही,पृष्ठ संख्या 40
39.वही, पृष्ठ संख्या 112
40.https://vagarthaadhuniksanskrit.blogspot.com/ *. 2, pp. 9–12.*

Received Date: 16.09.2023
Publication Date: 30.09.2023